There is need for mock exercises to enhance the level of preparedness and to generate mass awareness on what they should do in the eventuality of massive quake. It is also the need of the hour that the Department of Science and Technology should come out with imperative quality research in earthquake engineering which might pave the way for earthquake forecast.

In the North-Eastern Region, though there is a need to generate mass awareness, the Assam Government, for instance, has done nothing worthwhile except publishing a few advertisements in the local newspapers just for the sake of maintaining that the Government is on the right track in the matter of disaster management and has concern for the lives of people. We need a dedicated wing for disaster management exclusively for spreading awareness.

There is a possibility of devastation before the people of the North-Eastern Region unless corrective measures are taken to save their lives ...(*Time-bell rings*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Yes, your time limit is over.

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam) : Sir, I associate myself with the matter raised by Shri Kumar Deepak Das.

SHRI TARINI KANTA ROY (West Bengal) : Sir, I associate myself with the matter raised by Shri Kumar Deepak Das.

Kali Ma Beer being produced by a brewing company in USA

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार) **:** उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से एक बहुत ही गम्भीर और संवेदनशील विषय सदन के सामने उठाने के लिए खड़ा हुआ हूँ। मैं अपने सभी आदरणीय मित्रों से इस विषय पर ध्यान देने का आग्रह करूँगा। अमेरिका की एक कंपनी है, बर्नसाइड ब्रिउइंग कम्पनी, यह पोर्टलैंड में है। इसने एक बीयर बनाया है, जिसका नाम रखा है—"काली माँ बीयर"। इसका पूरा फोटो भी छपा है, यह मेरे पास है, यह हिन्दुस्तान टाइम्स में छपा है। इसका जो विज्ञापन निकला, उसमें लिखा हुआ है "The advertisement for the beer read, Come worship 'the black one' Kali as the ultimate reality or Brahman this Tuesday!"

माननीय उपसभाध्यक्ष जी, हम सभी विचार और आस्थाओं का आदर करते हैं। यही हमारे देश ने सिखाया है। लेकिन किसी भी आस्था का अनादर नहीं होना चाहिए। अमेरिका में यह कोई पहली बार नहीं हुआ है। इसके पहले एक टॉयलेट पर लक्ष्मी जी की तस्वीर लगाई गई थी, तो आपत्ति हुई थी। उसके पहले एक ब्रा पर किसी भगवान की फोटो लगाई गई थी। वहाँ की एक बहुत बड़ी सुपर मॉडल हैं, वे एक नाइट क्लब में माँ काली बन कर चली आईं। वहाँ पर एक टॉक शो चलता है, जो ह्यूमर शो है, उसमें भगवान गणेश को एक सेक्स ऑब्जेक्ट बना कर दिखाया गया। यह कौन-सी बात हो रही है? यह बहुत पीड़ा की बात है।

अभी जब आपत्ति हुई, तो उन्होंने कहा कि हम इसको रोकते हैं। हमारा आपसे विनम्र निवेदन है, भारत सरकार, यूपीए की सरकार अमेरीका के साथ अच्छे सम्बन्धों का दावा करती है, लेकिन इस देश और दुनिया की इतनी बड़ी आस्थाओं के प्रतीक का वहाँ इस तरह से असम्मान होता है! क्या वहां कोई कोड नहीं है? क्या वहां कोई एडवर्टिज़मेंट कोड नहीं है? क्या वहां पर मेन्युफेक्चरिंग का कोई कोड नहीं है?

[श्री रवि शंकर प्रसाद]

उपसभाध्यक्ष जी, यह एक बड़ा सवाल है, जिसे मैं बहुत पीड़ा से उठाना चाहता हूं कि किसी अन्य आस्था के ईश्वर को अमरीका की कम्पनी क्या इस तरह से दिखा सकती है? यह बहुत बड़ा सवाल है। हम लोगों ने यह विषय बार-बार उठाया है, लेकिन भारत सरकार हमारी चिन्ता को गंभीरता से नहीं लेती है। उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से आग्रह करूंगा, यह विषय बहुत गम्भीर है, सरकार इस पर जवाब दे। अमरीका के राजदूत को विदेश मन्त्रालय बुलाया जाए, उनसे बात की जाए और अमरीकी सरकार इसके लिए माफी मांगे। अगर यह कोई पहली गलती होती फिर भी समझ में आता है, लेकिन बार-बार यही हो रहा है, आस्थाओं के साथ खेल हो रहा है, भावनाओं के साथ खेल हो रहा है, यह बहुत ही अनुचित है।

महोदय, मैं इसकी भर्त्सना करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि आप सरकार को निर्देश दें, विदेश मंत्री यहाँ आकर उत्तर दें। अमरीका के राजदूत को बुला कर आप अपनी प्रतिक्रिया और हमारा रोश एवं विरोध सब दर्ज कराएं। यही मुझे कहना है।

DR. (SHRIMATI) NAJMA A. HEPTULLA (Madhya Pradesh) : Sir, I also associate myself with this important matter raised by Shri Ravi Shankar Prasad.

श्रीमती माया सिंह (मध्य प्रदेश) : सर, मैं इसके द्वारा उठाए गए इस गंभीर विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

श्री विनय कटियार (उत्तर प्रदेश) : सर, मैं इनके इस गंभीर विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

SHRI BALBIR PUNJ (Odisha) : Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री प्रकाश जावडेकर (महाराष्ट्र) : सर, मैं इनको एसोसिएट करता हूं।

श्री रघुनन्दन शर्मा (मध्य प्रदेश) : सर, हम इनके द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करते हैं।

श्री प्रभावत झा (मध्य प्रदेश) : सर, मैं इनको एसोसिएट करता हूं।

श्री अविनाश राय खन्ना (पंजाब) : उपसभाध्यक्ष जी, हम इनके इस गंभीर विषय से स्वयं को सम्बद्ध करते हैं।

श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी (गुजरात) : सर, मैं इनके इस विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Okay. ...(*Interruptions*)... All are associating.

श्री रवि शंकर प्रसाद : सर मंत्री महोदय उत्तर तो दें, यह बहुत गंभीर विषय है **...(व्यवधान)...**

श्री अविनाश राय खन्ना : सर, यह बहुत गंभीर मसला है **...(व्यवधान)...**।

श्री राजीव शुक्ल : सर, माननीय सदस्य श्री रवि शंकर प्रसाद जी ने यह गंभीर मुद्दा उठाया है। हम यही कह सकते हैं कि हम इनकी चिन्ता से विदेश मंत्री जी को अभी, आज ही बात करके अवगत करा देंगे।

लेकिन इसके साथ मैं एक बात और जोड़ना चाहता हूं। कुछ साल पहले, जहां रवि शंकर प्रसाद जी बैठे हैं, वहां मैं बैठा था और रवि शंकर प्रसाद जी यहाँ मंत्री बन कर बैठे थे। इस समय भी यह विषय आया था कि गणेश जी और शंकर जी की फोटो अमेरीका के एक स्टोर में चप्पलों पर थी **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसाद : उस समय हमने विरोध किया था **...(व्यवधान)...** हमारी सरकार ने विरोध किया था **...(व्यवधान)...**

श्री राजीव शुक्ल : जब यह विषय हम लोगों ने उठाया था, उस समय न कोई कार्यवाही हुई थी और न ही कोई विरोध हुआ था, यह बात आप ध्यान में रखें, बस **...(व्यवधान)...** आप यह बात ध्यान में रखें **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसाद : उस समय सरकार ने विरोध किया था **...(व्यवधान)...** माननीय मंत्री जी भारत सरकार के मंत्री हैं और वह इस तरह का बयान **...(व्यवधान)...**

श्री राजीव शुक्ल : उस समय कुछ नहीं हुआ थ **...(व्यवधान)...** न वहां के मंत्री को बुलाया गया न ही कुछ और हुआ **...(व्यवधान)...** कुछ नहीं हुआ था **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसाद : मंत्री जी सदन की भावनाओं के साथ राजनीति न करें **...(व्यवधान)...**

श्री राजीव शुक्ल : जब आप बोलें तो भावना है और जब हम बोलें तो भावना नहीं है **...(व्यवधान)...**सिर्फ आपकी भावनाएं हैं? **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसाद : उस समय हमने विरोध किया था **...(व्यवधान)...** वे ऐसी बात न करें **...(व्यवधान)...** आज जो विषय उठाया गया है, आप उसका उत्तर दीजिए **...(व्यवधान)...** सरकार से कहिए कि **...(व्यवधान)...**

श्री राम कृपाल यादव (बिहार) : सर, यह तो दोनों दलों के सदस्यों में कुश्ती हो रही है **...(व्यवधान)...**

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Next, Shri Prabhat Jha. ...(*Interruptions*)... They can settle it. ...(*Interruptions*)... Shri Prabhat Jha ...(*Interruptions*)... They can settle it. No, no. ...(*Interruptions*)... Mr. Prabhat Jha ...(*Interruptions*)... ...(*Interruptions*)...

श्री विनय कटियार : सर, इस गंभीर विषय को हंसी में क्यों उड़ाया जा रहा है? **...(व्यवधान)...**

श्री रवि शंकर प्रसाद : मैं आपसे हाथ जोड़ कर कहूंगा, हम लोगों की भावनाओं के साथ इस प्रकार **...(व्यवधान)...**

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : He has reacted. ...(*Interruptions*)... No, no. Mr. Ravi Shankar Prasad, the Minister has said ...(*Interruptions*)... Please. ...(*Interruptions*)...

श्री विनय कटियार : सर, यह बहुत गंभीर मामला है **...(व्यवधान)...** दूसरे पर आरापे लगा कर **...(व्यवधान)...**

उपसभाध्यक्ष (प्रो पी.के. कुरियन) : विनय जी **...(व्यवधान)...** विनय जी, बैठिए **...(व्यवधान)...**

श्री विनय कटियार : हम कैसे बैठें, सर? **...(व्यवधान)...**

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : The Minister has already said that it will be brought to the notice of the External Affairs Minister for necessary action. What more do you want? ...(*Interruptions*)... विनय जी, बैठ जाइए **...(व्यवधान)...** सुनिए **...(व्यवधान)...** मिनिस्टर ने यह बोला है कि वह एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर के नोटिस में यह लाएंगे

[PROF. P.J. KURIEN]

for whatever possible action. That is an assurance. What more do you need? Sit down. No, please. ...(*Interruptions*)... That is an assurance. Next is Mr. Prabhat Jha. ...(*Interruptions*)... The Minister is kind enough to give an assurance. What more do you want? ...(*Interruptions*)... No, no. Mr. Pabhat Jha, please speak. ...(*Interruptions*)...

Disregard and carelessness shown towards the CGHS cardholders by Private Hospitals in Delhi

श्री प्रभात झा (मध्य प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरे पास एक आइडेंटिटी कार्ड होता है, जिससे मैं गाड़ी चलाता हूं, एक आइडेंटिटी कार्ड से मैं राज्य सभा में आता हूं, एक आइडेंटिडी कार्ड से मैं बैंक में जाता हूं, इस तरह बहुत सारे ऐसे आइडेंटिटी कार्ड होते हैं।

केन्द्र सरकार ने लाखों लोगों को सीजीएचएस के माध्यम से भी एक कार्ड दिया हुआ है कि जब आप बीमार पड़ें तो जहाँ पर इसकी मान्यता है, तत्काल वहां जा कर आप भर्ती हो जाएं, लेकिन इस कार्ड का इतना बड़ा मजाक हो रहा है। पिछले दिनों आपने सांसद महोदय के केस में देखा कि जगजीवन राम अस्पताल में उनके साथ क्या हुआ, एक्सपायर होने के बाद उनके शव को प्राप्त करने के लिए क्या-क्या किया गया।

1954 में यह अधिकार केवल दिल्ली में दिया गया था। इसके बाद देश के कुछ अन्य प्रान्तों में इस योजना को लागू करने के लिए भेजा गया। कुछ अस्पताल सिलेक्ट किए गए, उन अस्पतालों में आप यह कार्ड ले जाइए, आप रिटायर्ड हैं, पेंशनधारी हैं, उप-राज्यपाल हैं, पूर्व-राज्यपाल हैं, न्यायाधीश हैं, ऐसे तमाम लोगों को यह सुविधा दी गई।

जब परसों रात FCI का एक रिटायर्ड कर्मचारी इस कार्ड को लेकर दिल्ली के एक अस्पताल में पेट दर्द की शिकायत लेकर पहुंचता है, तो उस अस्पताल में उसका अल्ट्रा साउण्ड, आदि चेक अप करने के बाद उससे कहा जाता है कि आपको कुछ नहीं है, आपका इस अस्पताल में कोई इलाज नहीं होगा, क्योंकि तब तक उसको मालूम हो गया कि यह पेंशनर है और इसके पास कार्ड है और इसका पैसा जल्दी नहीं मिलेगा, इसलिए उसने उसको टरका दिया। इसके बाद उसका दर्द बढ़ने लगा, पेट फूलने लगा और उसकी हालत सीरियस होने लगी, तो फिर वह दूसरे अस्पताल में जाता है। उस अस्पताल में भी वह कार्ड को दिखाता है, उस कार्ड को दिखाने के बाद उसके साथ वही ज्यादती होती है। वह आदमी मौत से जूझ रहा है, लेकिन उसको कहा जाता है कि आप सरकारी अस्पताल में जाइए, राम मनोहर लोहिया अस्पताल में जाइए। आपने लाखों लोगों को यह कार्ड दिया है। आपने यह कार्ड उनको इसलिए दिया है, ताकि उनकी हिफाजत हो, उनका इलाज हो। इसके बाद वह, यानी के.के. शारदा नाम का कर्मचारी प्राइवेट अस्पताल में एडवांस में पैसा जमा करके एडमिट होता है और वहां उसका ऑपरेशन होता है, लेकिन उस कार्ड का कोई उपयोग नहीं होता है। ऐसे एक नहीं अनेक मामले हैं।

"कैग" ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि तमाम सारे ऐसे बिल्स के अम्बार लगे हुए हैं, लेकिन उनका निराकरण नहीं हो रहा है और इस कारण से अस्पतालों को पैसा नहीं जाता है। जिंदगी और मौत से जूझते आदमी के लिए यह कार्ड आशा की किरण होती है, तो मैं अस्पताल में जाकर दिखाऊंगा, लेकिन ऐसा होता नहीं है। देश में लाखों कर्मचारी हैं और पेंशनधारी हैं। **...(समय की घंटी)... ...(व्यवधान)...**

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Your time is over. ...(*Interruptions*)... Your time is over. ...(*Interruptions*)...